Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

रूस यूक्रेन युद्ध का एक विश्लेषण: विश्व व्यवस्था के संदर्भ में

डॉ0 निशु कुमार
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा, रुड़की।

सारांश–

21वी शताब्दी के सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी दौर की दुनिया संवाद और संप्रेषण पर इतने नजदीक आ गए हैं कि राष्ट्र हितों की भूमिका द्वितीयक प्रतीत होने लगी हैं, अर्थात आज विश्व के सभी देश एक दूसरे के प्रति आर्थिक, सामरिक, राजनीतिक रूप से परस्पर निर्भरता के रूप में जुड़े हैं। जिसके कारण उनके राष्ट्रीय हितों की परिभाषाएं इस परस्पर निर्भरता के कारण बदल रही है। रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष एवं युद्ध की स्थितियों में ना केवल दुनिया को बीसवीं शताब्दी के शीतयुद्ध की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। बल्कि इस आर्थिक और सूचना प्रौद्योगिकी व तकनीक की दुनिया में कैंपिंग डिप्लोमेसी का नया आयाम शुरू हो चुका है। जिसके परिणाम ना केवल विश्व की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा, बल्कि वैश्विक परिदृश्य में कल्याणकारी और सार्वजनिक हितों के संदर्भ में कार्यरत संस्थाओं की कार्यविधि भी प्रभावित होगी। क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने जहां पिछले 70 वर्षों में पर्यावरण और मानव के बीच के संबंध को सरल और सतत रूप में स्थापित करने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। वही युद्ध की परिस्थितियों में उक्त प्रयासों को नजरअंदाज करते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के सभी सही और गलत आयामों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से अपनाया जाएगा। जिससे 21वीं शताब्दी की यह दुनिया नई व्यवस्था के रूप में चिन्हित होगी। जिसमें विकासशील देश भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका सहित अनेक तीसरी दुनिया के देश निर्णायक भूमिका के रूप में होंगे, क्योंकि यहां ना केवल उत्पादक के रूप में समृद्धि का आई है बल्कि एक बड़े बाजार के रूप में विकसित राष्ट्रों के उत्पाद के लिए उपलब्धता हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

मुख्य शब्द:- शीत युद्ध परस्पर निर्भरता पर्यावरण और मानव राष्ट्रहित विश्व व्यवस्था सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी दौर आदि।

प्रस्तावना

मानवीय युद्धों में जब भी राष्ट्र हितों का संदर्भ आता है, तो उपनिवेश शासन व्यवस्था के साम्राज्य द्वारा दुनियाभर पर शासन कर अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करके औद्योगिक क्रांति को अंजाम मुख्य राष्ट्र हित के आयाम के रूप उल्लेखित किया जाता है, किंतु 19वीं शताब्दी जहां मशीनी और मानवीय जरूरतों की अविष्कारक शताब्दी रही, वही 20वीं शताब्दी में राष्ट्रीय हितों के संदर्भ में भौगोलिक संरचना एवं राष्ट्रीय हितों के रूप में राष्ट्र सम्मान एक प्रमुख मुद्दा बन गया। क्योंकि 19वीं शताब्दी में पैदा हुई। वैचारिक विचारधारा आधारित राजनीतिक संस्थाओं ने 20वीं शताब्दी में स्वयं को अलग–अलग रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। जिसका प्रथम प्रयास रूस में लेनिन के द्वारा मार्क्सवाद के बदले हुई (साम्यवाद का रूप) विचारधारा के रूप में दिखाई पड़ता है।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में विचारधाराओं की कुंठा में प्रथम विश्वयुद्ध की उत्पत्ति हुई, जिसने ना केवल तत्कालीन परिस्थितियों की शासनकाल शक्तिशाली राष्ट्र/राज्य की सीमाओं को परिवर्तित किया। बल्कि हारे हुए रास्तों को उनके आत्मसम्मान और क्षतिपूर्ति से प्रताड़ित किया गया। जिसके कारण द्वितीय विश्व युद्ध उत्पन्न हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद दुनिया भर में विचारधाराओं और शोषणकारी प्रवृत्तियों की समाप्ति का दौर पैदा हुआ। किंतु संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ ने प्रतिस्पर्धा की नई प्रवृत्ति को शीतयुद्ध के रूप में शुरू कर दिया। जिसके कारण पूरी दुनिया में मानवीय नैतिकता के स्थान पर हथियारों की दौड़ में शामिल हो गई। हालांकि द्वितीय विश्व युद्ध में जापान पर हुए परमाणु आक्रमण के बाद पूरी दुनिया में निशस्त्रीकरण की एक प्रक्रिया शुरू हुई। जिसका मुख्य उद्देश्य यह था कि दुनिया में मानव जाति के बीच शांति और सद्भावना पैदा हो, किंतु शीत युद्ध की कैंपेनिंग में अमेरिका और सोवियत संघ ने स्वयं को संरक्षित

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

करते हुए अल्पविकसित व विकासशील देशों में निशस्त्रीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने का कार्य किया। जिसके कारण यूक्रेन जैसे देश जो परमाणु शक्ति में तत्कालीन परिस्थितियों में तीसरे स्थान पर थे। उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति के साथ–साथ अपने हथियारों के जखीरे में भारी कटौती की और शांति और सद्भाव के रास्ते पर शासन सत्ता और जनसामान्य के बीच राजनीति का नया दौर शुरू किया। वही दूसरी ओर 1990 आते आते सोवियत संघ भ्रष्टाचार और परिवारवाद की श्रेणी में लिप्त हो चुका था, जिसके कारण सोवियत संघ का भौगोलिक विघटन हुआ और एक बड़ा भूभाग सोवियत संघ से अलग होकर छोटे–छोटे देशों में विभाजित हो गया। जिसके परिणाम स्वरूप वैश्विक शक्ति एक ध्रुवीय व्यवस्था के रूप में यूएसए की तरफ झुक गई।

आतंकवाद और विश्व व्यवस्था–

21वी शताब्दी के सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी दौर में जहां रूस ने स्वयं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक आधारों पर स्थापित किया है, वही रूस ने हथियारों की एक बड़ी कॉर्पोरेशन या कंपनियां सैक्टर को स्थापित कर अल्प विकसित व विकासशील देशों में हथियारों निर्यात के लिए बाजार की तलाश कर वहां हथियारों की डिप्लोमेसी एवं हथियारों के निर्यात से आर्थिक उन्नति प्राप्त की। जिसका मुख्य कारण रही आतंकवादी गतिविधियों, 21वीं शताब्दी में मध्य एशिया के चरमपंथी संघर्ष की समाप्ति के बाद दुनिया भर में मुस्लिम राष्ट्र संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया है। क्योंकि 21वीं शताब्दी के शुरुआत में ही तालिबानी संगठन के प्रमुख ओसामा बिन लादेन के द्वारा अमेरिका पर अमानवीय आत्मघाती आक्रमण किए जाने के बाद संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के द्वारा मध्य एशिया में चर्मपंथी आतंकी संगठनों को उजाड़ दिया गया। जिसके कारण मध्य एशिया में शांति और सद्भाव के साथ राजनीतिक समाजिक, आर्थिक जनजीवन के साथ कूटनीति हुई और अफगानिस्तान के रूप में पैदा हो रही हैं, किंतु रूस जैसे देशों में जहां हथियारों एवं विचारधाराओं की कूटनीति देश की राष्ट्र शक्ति की मुख्य प्रवृत्ति हैं, उसे बनाए रखने के लिए वर्तमान में रूस द्वारा यूक्रेन पर अनर्गल प्रवृत्ति व

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

राजनीतिक आपत्ति के आरोप लगाकर यूक्रेन की अंतर्राष्ट्रीय सीमा को अवैध रूप से सैन्य बल का प्रवेश कराकर यूक्रेन पर आक्रमण कर दिया गया है।

रूस यूक्रेन युद्ध–

रूस यूक्रेन युद्ध 21 वी शताब्दी का वह अतिक्रमण है जिसमें दो शिक्षित और आधुनिक देश आपस में मानवता को थोपी प्रतिस्पर्धा में रौंद रहे हैं, क्योंकि यह युद्ध 2014 से निरंतर अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को लेकर संघर्ष में है। जिसमें मुख्य रुप से रूस और उसकी समर्थक सेनाएं के साथ–साथ यूक्रेन में रूस के समर्थक विद्रोहियों द्वारा पैदा की गई संघर्ष की स्थिति है। जिसने 2021 में अपनी धैर्य और सहनशीलता की सारी सीमाओं को तोड़ दिया। जिसके परिणाम स्वरूप एक अंतरराष्ट्रीय तनाव की स्थिति में वर्तमान परिस्थितियों में एक युद्ध लड़ा जा रहा है। जिसमें लगभग 80 दिन बीत चुके हैं। इस कालखंड में मानव और प्राकृतिक संसाधनों की अत्यधिक हानि हुई है। जिसके कारण यूरोपीय महाद्वीप के साथ–साथ संपूर्ण विश्व में तनाव की स्थिति निरंतर बनी हुई है। क्योंकि जहां कुछ राष्ट्रीय और राज्य रूस के इस अतिक्रमण का समर्थन कर रहे हैं। वही कुछ लोग यूक्रेन को आर्थिक एवं सैन्य सहायता देकर उसकी मदद कर रहे हैं। क्योंकि यूक्रेन रूस युद्ध ने यूक्रेन में गोरिल्ला वार की परिस्थितियां पैदा कर ली है। जिसके परिणाम स्वरूप यूक्रेन की सेना के साथ–साथ यूक्रेन के नागरिक यूक्रेन की संप्रभुता और सुरक्षा के लिए लड़ रहे हैं।

युद्ध की परिस्थितियों एवम् नाटो की सामरिक गतिविधि–

यूक्रेन रूस युद्ध के शुरू होने के बाद जहां अधिकांश देशों ने यूक्रेन का समर्थन करते हुए रूस के द्वारा अतिक्रमण की परिस्थितियों की आलोचना की हैं। क्योंकि रूस जहां ना केवल क्षेत्रफल की जनसंख्या के साथ–साथ सैन्य व्यवस्था में विश्व के शीर्ष देशों में है। जबकि यूक्रेन छोटा और आर्थिक समृद्धि देश है, जो आधुनिक परिस्थितियों को प्रोत्साहित करने के लिए पश्चिमी यूरोप के साथ–साथ अमेरिका के साथ अपने संबंधों को स्थापित किए हुए हैं। इन्हीं संबंधों के परिणामस्वरूप रूस ने नाटो अर्थात नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन से

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

सामरिक परिस्थितियों की चुनौतियां के भय से यूक्रेन को निशाना बनाया है। क्योंकि हाल ही के कुछ वर्षों में यूक्रेन नाटो देशों के संगठन में शामिल होने के लिए अभिव्यक्ति कर चुका था। जिसके परिणाम स्वरूप रूस की सीमाओं पर नाटो की पहुंच का खतरा मानते हुए रूस ने तथाकथित आधारों पर यूक्रेन में आंतरिक विद्रोह को प्रोत्साहित किया। जिनके संरक्षण के नाम पर रूस के द्वारा यूक्रेन पर हमला किया गया। यूक्रेन पहले ही रूस के द्वारा अवैध रूप से ब्लैक सी (काले समुंद्र) में क्रीमिया क्षेत्र को दवा चुका है। अब रूस ने रूस की सीमा रेखा से लगे हुए, दो यूक्रेन के प्रांतों को अवैध रूप से संप्रभु बनाने के साथ–साथ रूस के संरक्षण वाला क्षेत्र घोषित करने की मनसा के आधार पर मानवता को युद्ध की श्रेणी में ला खड़ा किया है। क्योंकि जहां संप्रभुता पर हमला बताते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ में यूक्रेन के प्रतिनिधियों ने दुनियाभर से रूस के आक्रमण की आलोचना का प्रस्तुतीकरण किया। वही यूक्रेन की संप्रभुता को बनाए रखने के लिए आर्थिक और सैन्य मदद के साथ–साथ मूलभूत बुनियादी सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए आग्रह किया। जिसमें अधिकांश देश यूक्रेन के पक्ष में खड़े हैं, वहीं कुछ देश जहां बाजार और उभरती हुई अर्थव्यवस्था में हैं। वह तटस्थ भूमिका में दिखाई पड़ रहे हैं जैसे भारत।

भारत ना तो उसको युद्ध की परिस्थितियां पैदा करने के लिए आलोचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहा है और ना ही प्रोत्साहन में, बल्कि दोनों देशों के बीच समझौते और समन्वय के भाग को स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। यूरोप में रूस के द्वारा गैस पाइपलाइन का आर्थिक उपबंध पैदा किया हुआ है। इस गैस पाइपलाइन से यूरोप के आधे से अधिक लोग अपनी दैनिक बुनियादी ऊर्जा की उपलब्धता प्राप्त करते हैं। यह गैस पाइपलाइन तब चर्चा में आई जब पश्चिमी यूरोप सहित रूस अमेरिका कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के द्वारा रूस पर 5000 से अधिक आर्थिक प्रतिबंध के साथ–साथ अन्य प्रतिबंध लगा दिए गए। वहीं रूस ने उक्त गैस पाइपलाइन की सप्लाई को अपनी मूल मुद्रा रूबल में विनिमय करने का आर्थिक शर्त स्थापित की। जिसे अनेक देशों द्वारा स्वीकार कर लिया गया। क्योंकि रूस के द्वारा दी जा रही गैस की आपूर्ति यूरोप की सर्दी में एक जीवन रेखा के रूप में

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

कार्य करती है जिसे सतत रूप से बनाए रखना रूस के लोगों के लिए नितांत आवश्यक है।

समस्या का विश्लेषणआत्माक पक्ष

उक्त दृष्टिकोणओं के आधार पर तृतीय विश्व युद्ध की संभावनाएं प्रस्तुत हो रही हैं, क्योंकि तृतीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियां पैदा होने से ना केवल यूरोप को आर्थिक सामाजिक और प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर अप्रत्याशित हानि होगी, बल्कि दुनिया भर में संप्रभुता के नियम पर उल्लंघन शुरू हो जाएगा। जिससे संपूर्ण विश्व उन्हें शीत युद्ध की परिस्थितियों में चला जाएगा। जिसके फल स्वरुप मानवता और मानव जीवन की परिस्थितियों पर संकट पैदा होने की संभावनाएं अत्यधिक पैदा हो जाएंगे, क्योंकि अनेक प्राकृतिक जानकारों का मानना है कि दुनिया भर में अणु और परमाणु बम की संख्या इतनी अत्यधिक है कि पृथ्वी जैसे गिरे को 7 बार नष्ट किया जा सकता है। अत: स्पष्ट है भीषण युद्ध की परिस्थितियां पृथ्वी पर मानव के लिए चुनौतीपूर्ण होंगे।

इस युद्ध का दूसरा पक्ष यह भी हो सकता है कि रूस अपने हथियारों की मार्केट को बढ़ाने एवं दुनिया भर में हथियारों की दौड़ को एक बार फिर पैदा कर छोटे–छोटे अल्प विकसित व विकासशील देशों में संघर्ष पैदा कर हथियार की आपूर्ति कर, अपनी आर्थिक मजबूती प्राप्त कर सके और 1990 के बाद सोवियत संघ के विघटन के बाद दुनिया में पैदा हुई एक ध्रुवीय व्यवस्था एवं 21 वी शताब्दी में भारत, चीन सहित अनेक राज्यों के शक्तिशाली होने के बाद पैदा हुई बहुध्रुवीय व्यवस्था में स्वयं को अग्रिम रूप में स्थापित कर, पृथ्वी पर शक्तिशाली देशों की श्रेणी में स्वयं की राष्ट्रहित आकंक्षा को पूरा कर सकें।

युद्ध में भारत कहां?

रूस और भारत के संबंधों की पृष्ठभूमि 1960 के दशक से ही एक सहयोगी समन्वय वाली रही है। क्योंकि 1962 के युद्ध के बाद भारत ने चीन के साथ संबंधों का विच्छेदन किया। वही भारत में समाजवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने के

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

लिए रूसी विचारधारा के आधार पर बैंकों का राष्ट्रीयकरण एवं बुनियादी स्तर पर जन सामान्य को सुविधाएं उपलब्ध कराने के संदर्भ में अनेक योजना का प्रयास किए गए। 1965 के युद्ध में भारत और पाकिस्तान के मध्य मध्यस्था करा कर रूस ने भारत के प्रति अपनी मित्रता पूर्ण संधियों को जीवित करने का प्रयास किया। साथ ही 1970 के दशक में रूस के द्वारा भारत में परमाणु परीक्षण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। जिसके परिणाम स्वरूप 1960 के दशक से वर्तमान तक रूस और भारत के बीच मित्रता पूर्ण संधियों का दौर सतत रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है।

वर्तमान परिस्थितियों में पैदा हुई युद्ध की परिस्थितियों में भारत ने ना केवल युद्ध को सिरे से नकारते हुए रूस और यूक्रेन के बीच तटस्था की भूमिका अदा की बल्कि दोनों के बीच शांति सद्भाव पैदा करने के लिए भारत में दोनों देशों को सरकारी आधारों पर संदेश जारी कर मानवीय दृष्टिकोण पैदा करने का प्रयास किया। साथ ही हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा यूरोप की विदेश यात्रा किए जाने के परिणाम स्वरूप भी यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध की परिस्थितियों को कम किए जाने की संभावनाएं पैदा की। हालांकि भारत रणनीतिक और आर्थिक आधारों पर रूस के अधिक नजदीक देखा जाता है क्योंकि रूस ने ना केवल भारत को तकनीकी सहयोग दिया है, बल्कि सामरिक दृष्टिकोण पर बड़े युद्ध पोतो एवम् ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल की उपलब्धता करा कर मित्रता के दृष्टिकोण को बनाए रखा है। वही यूक्रेन के साथ भारत के शिक्षण और आर्थिक दृष्टिकोण से संबंध पिछले कई वर्षों से सामान्य और सरल हैं। क्योंकि वर्तमान में, भारत के लगभग 40000 विद्यार्थी चिकित्सा क्षेत्र में अपनी कौशल और दक्षता को प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही युद्ध के बीच फंसे हुए इन विद्यार्थियों को निकालने में ना केवल रूस ने बल्कि यूक्रेन ने भी भारत की अनुशंसाओ महत्व दिया है। जिसके कारण भारत ने ना केवल स्वयं को तटस्थ भूमिका में बनाए रखा है।

वहीं दूसरी ओर अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे बड़े आर्थिक और सैन्य देशों ने स्वतंत्र रूप से ना केवल यूक्रेन को आर्थिक बल की सैन्य मदद के साथ–साथ तकनीक उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके कारण युद्ध की विकट

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

परिस्थितियां और भी भयानक होने की परिस्थितियों में पहुंच जाती हैं। किंतु भारत, चीन, ईरान, सऊदी अरब जैसे बड़े देशों ने ना केवल स्वयं को तटस्थ रखा है, बल्कि दुनिया भर में पैदा हुई सैन्य समूह की व्यवस्था से स्वयं को अलग रखा है। जिससे शांति और सद्भाव के लिए दोनों ही समूह में कूटनीतिक और राजनीतिक रणनीति के आधार पर पैदा हुए तीसरे विश्वयुद्ध के हालातों को कम करने का प्रयास किया है एवम वर्तमान परिस्थितियों में तृतीय विश्व युद्ध की संभावनाएं अत्यंत कम है। जिसका मुख्य कारण आर्थिक एवं पृथ्वी संरक्षण है।

प्रशांत और हिंद महासागर में अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, भारत के संयुक्त संगठन (क्वार्ड) का प्रभाव–

प्रशांत महासागर में, चीन के द्वारा दक्षिण चीन सागर में अनेक द्विपों पर अपनी संप्रभुता थोपने का प्रयास किया जा रहा है एवं साम्यवादी प्रभाव के कारण प्रशांत महासागर में चीन अपनी विस्तारवादी नीति को क्रियान्वित कर रहा है। जिसके कारण हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में अनेक देश अपनी संप्रभुता को खतरा मान रहे हैं। जिसके कारण आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत में संयुक्त रूप से क्वार्ड नाम से सामरिक संगठन का निर्माण किया है। जो ना केवल लोकतांत्रिक संप्रभुताओं का संरक्षण करेगा, बल्कि आर्थिक दृष्टिकोण से इस क्षेत्र में चीन के आर्थिक अतिक्रमण को संतुलित कर छोटे, पिछड़े और विकासशील देशों को आर्थिक संरचना का एक नया आयाम स्थापित करेगा। जैसे इन देशों की आर्थिक राष्ट्रहित की मांग पूरी होगी, बल्कि उक्त शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं को नए बाजार की प्राप्ति होगी एवं स्वार्थी चीन के बढ़ते दबाव को सामरिक और आर्थिक दृष्टिकोण से कम किया जा सकेगा। क्योंकि रूस और यूक्रेन के युद्ध के परिणाम स्वरुप चीन ताइवान जैसे छोटे देश पर अनावश्यक रूप से अतिक्रमण और युद्ध थोपने की नीति अपना सकता है। साथ ही चीन ने प्रशांत और हिंद महासागर में अनेक देशों के तटीय बंदरगाहों को आर्थिक आतंकवाद एवं वित्त बोझ के माध्यम से हड़प लिया है। जिनका उपयोग चीन अपने आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण के आधारों पर साम्राज्यवादी नीति के आयामों पर कार्य कर रहा है। इसलिए रूस और यूक्रेन के युद्ध से भारत, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया आदि लोकतांत्रिक देशों को साम्राज्यवादी साम्यवादी नीति के बढ़ते दृष्टिकोण को ना केवल भविष्य आधारित दृष्टिकोण को संज्ञानित करते हुए सामूहिक समन्वय के समझौते के आधार पर चुनौती देने का वैश्विक आयाम स्थापित करना चाहिए बल्कि आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण पर पिछड़े हुए राज्यों को चीन के वित्त आतंकवाद और वित्त बोझ से बचाते हुए विश्व के इन देशों की संप्रभुता को संरक्षण देने का कार्य करना चाहिए।

अवधारणाात्मक विमर्श निष्कर्ष–

रूस ने यूक्रेन के क्रीमिया क्षेत्र को भी कुछ वर्ष पूर्व ही सैन्य बल पर हथिया लिया गया था। जिसके कारण रूस ने कुछ स्थानीय चरमपंथी संगठनों के आधार पर एवं यूक्रेन में राजनीतिक अराजकता का हवाला देते हुए आक्रमण कर अंतरराष्ट्रीय संप्रभुता नियम की अवहेलना की है। जिसके परिणाम स्वरूप ना केवल मत्स्य नियम के आधार पर बड़े शक्तिशाली राज्य भविष्य में छोटे राज्यों की संप्रभुता अवहेलना कर आक्रमण से हथिया सकते हैं। जिसका पृथ्वी पर मानव प्रकृति संतुलन को भी हानि पहुंचा सकते हैं। क्योंकि अनेक परमाणु ऊर्जा के संदर्भ के वैज्ञानिकों ने यह तथ्यात्मक रूप से प्रति वेदना व्यक्त की है कि पृथ्वी जैसे ग्रह को नष्ट करने की क्षमता के परमाणु हथियार पृथ्वी के विभिन्न देशों के पास हैं। जिसके कारण मानवीय सभ्यता पर संकट आ सकता है।

अत: युद्ध परिस्थितियों से ना केवल विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाओं को भारी नुकसान का सामना करना पड़ेगा, बल्कि पृथ्वी पर बमबारी होने से ना केवल प्राकृतिक संसाधनों को हानि पहुंचेगी। जिससे वायुमंडल और पृथ्वी के बीच के संबंध के संतुलन को हानि पहुंच सकती है। इन्हीं चिंताओं और भविष्य की परिकल्पनाओं के आधार पर तीसरे विश्वयुद्ध की संभावनाएं अत्यंत कम दिखाई पड़ रहे हैं। हालांकि युद्ध की विकट परिस्थितियों से ना केवल यूरोप बल्कि संपूर्ण विश्व प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता एवं बाजार में पैदा हो रही महंगाई के कारण त्रस्त है। जिसमें भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमार जैसे देशों में इसके दुष्परिणाम देखे जा सकते हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.19
www.ijmer.in

संदर्भ ग्रंथ सूची

- सिंघल, डॉ0 एस0सी0, समकालीन राजनीतिक मुद्दे लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन।
- पंत, डॉ0 पुष्पेश एवं श्रीपाल जैन, अंतरराष्ट्रीय संबंध, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1994।
- सिंह, उमा, भारत–पाकिस्तान रिलेशन इज ए हिस्टोरिकल प्रोस्पेक्टिव वर्ल्ड फोकस, मंथली डिस्कशन जनरल अक्टूबर–नवंबर दिसंबर 2001 पर संख्या 33।
- Singh, Dr RB, Bharat mein aatankwad Radha publication nai Delhi prashn sankhya 97.